

UGC 45080

Vol - 10/Jan 2018

ISSN 2321 5054

History Times

A Peer Reviewed & UGC Approved Research Journal
of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon

Prof. B. K. Shrivastava



Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)
Regd. No. 06/09/01/09369/12

CONTENTS

1.	Shilpkar Castes in Uttarakhand : Social and Economic Exclusion <i>Isha Tamta</i>	1
2.	An Overview of Situation of Tribal Women With Special Reference to M. P. <i>Neha Rajput</i>	6
3.	भारत में महिला शिक्षा की प्रगति-प्राचीन काल से आधुनिक काल तक <i>अभिषेक अग्रवाल</i>	13
4.	रघुनाथ राव : सागर का अंतिम सूबेदार <i>डॉ. बी.के. श्रीवास्तव</i>	24
5.	कमला राजा महाविद्यालय के चित्रकला विभाग में दर्शित सिंधियाकालीन संस्कृति की चित्रात्मक झांकी <i>डॉ. कुमकुम माथुर</i>	28
6.	सिंधिया राजाओं के ग्वालियर किला टकसाल से जारी ताँबे के सिक्के : एक अध्ययन <i>डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ</i>	32
7.	सिंधिया अथवा सरदार स्कूल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन <i>डॉ. मीना श्रीवास्तव</i>	38
8.	बुन्देलखण्ड प्रारम्भ से चम्पतराय तक <i>डॉ. नवीन गिडियन</i>	43
9.	विदेशी यात्रियों के विवरण में मराठाकालीन छत्तीसगढ़ <i>डॉ. पंकज सिंह</i>	49
10.	पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल की साहित्य साधना <i>डॉ. सीमा पाण्डेय</i>	56
11.	कोटा के जागीरदारों की विभिन्न श्रेणियाँ एवं उपाधियाँ <i>सुनीता ओझा</i>	63
12.	त्रिपुरी के कलचुरियों का ऐतिहासिक भूगोल <i>डॉ. वन्दना गुप्ता</i>	67
13.	परमार काल में शाक्त धर्म <i>डॉ. विभा राठौड़</i>	79

Prof. Naveen Gideon

Editor, "History Times"

Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Cell : 9425020650, E-Mail : historytimes2010@gmail.com

विदेशी यात्रियों के विवरण में मराठाकालीन छत्तीसगढ़

डॉ. पंकज सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर - इतिहास विभाग,

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

विदेशी यात्रियों के विवरण का भारतीय इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है। प्राचीन काल से लेकर ब्रिटिशकाल तक अनेक यात्रियों ने अपने-अपने ढंग से तत्कालीन भारतीय समाज, धर्म, राजनीतिक गतिविधियों तथा संस्कृति का वर्णन किया है। प्रस्तुत शोधपत्र मराठाकालीन छत्तीसगढ़ के इतिहास पर आधारित है। 18 वीं एवम् 19 वीं शताब्दी में युरोपीय यात्रियों ने छत्तीसगढ़ की यात्रा की थी। युरोपीय यात्रियों ने मराठाकालीन छत्तीसगढ़ के संबंध में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ अपने संस्मरण, पत्रों तथा रिपोर्टों के माध्यम से दी हैं। मराठाकाल में कोलब्रुक, फॉरेस्टर तथा कैप्टन ब्लंट आदी युरोपीय यात्रियों छत्तीसगढ़ की यात्रा की तथा अपने संस्मरण लिखे जिन्हें ब्रिटिश शासन ने सन् 1930 में प्रकाशित किया। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधपत्र जिन प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया है उनमें प्रमुख हैं - ब्रिटिश शासन द्वारा प्रकाशित अर्ली यूरोपियन ट्रेवल्स इन द नागपुर टेरीटरी, सन् 1930 ई., सी.यू., एचिशन द्वारा कलेक्शन ऑफ ट्रिटिज इन्वेजमेंट्स एण्ड सनड्स रिलेटिंग टू इंडिया एण्ड नेवरिंग कन्ट्रीज (ब्रिटिश शासन द्वारा प्रकाशित 1909), सी.यू., विल्स द्वारा ब्रिटिश रिलेशन विथ द नागपुर स्टेट इन द एटीन्थ सेंचुरी आदी। द्वितीयक स्रोतों में प्रमुख हैं- पी.एल., मिश्र की पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ छत्तीसगढ़, 1979, रायपुर। डब्ल्यू. डब्ल्यू., हंटर द्वारा संपादित इम्पीरियल गेजेटियर ऑफ इंडिया, खण्ड 23, नेलसन द्वारा संपादित बिलासपुर जिला गेजेटियर, 1909 आदी।

प्राकृतिक संसाधनों तथा धन धान्य से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य 1 नवम्बर सन् 2000 ई. को भारतीय संघ के 26वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। यह एक नवोदित राज्य है। छत्तीसगढ़ का विस्तृत भूखण्ड अतीत काल से महाकान्तार दण्डकारण्य, कौसल, दक्षिण कौसल आदि विविध नामों से इतिहास में अपने अस्तित्व को प्रमाणित करता रहा है। “धान का कटोरा” की संज्ञा से अभिहित किए जाने वाले इस अंचल की चेतना विकासोन्मुखी रही है। आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल होने के कारण छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक गरिमा में अभिवृद्धि होती रही है। पर्वत शृंखलाओं से युक्त वनाच्छादित इस क्षेत्र को महानदी, शिवनाथ, इन्द्रावती, हसदों, जोंक, पैरी, माडिन आदि नदियाँ अपने जल से सिंचित कर उर्वरा बनाती हैं। छत्तीसगढ़ क्षेत्र 17°-46' उत्तरी अक्षांश से 24°-6' उत्तरी अक्षांश एवं 80°-05' पूर्वी देशांतर से 84°-15' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। छत्तीसगढ़ के उत्तर-पश्चिम में मध्यप्रदेश का रीवा संभाग, उत्तर-पूर्व में उड़ीसा और झारखण्ड दक्षिण में आंध्र प्रदेश और पश्चिम में महाराष्ट्र राज्य स्थित है।

छत्तीसगढ़ में मराठों के आगमन के पूर्व कलचुरियों का शासन था। छत्तीसगढ़ में लगभग सात सौ वर्षों तक एकछत्र शासन करने वाले कलचुरियों का शासन 1740 ई. के आस-पास क्रमशः सूर्यास्त की ओर अग्रसर हो गया था। रघुनाथ सिंह को राज गद्दी पर बैठे मात्र 8 वर्ष हुए थे कि नागपुर के रघुजी राव भोंसले ने उड़ीसा और बंगाल विजय की योजना बनायी और सन् 1742 में अपने सेनापति भास्कर पंत की 30,000